

**अनवाद** पुं. (तत्.) 1. व्यर्थ की बातचीत 2. कठोर, कटु बात, दुर्वचन।

**अनवाप्त** वि. (तत्.) अप्राप्त, अनुपलब्ध (तत्.) स्त्री. अनवाप्ति अप्राप्ति, अनुपलब्धि।

**अनवासना** स.क्रि. (तत्.) नए बर्तन, वस्त्र को पहली बार प्रयोग में लाना।

**अनवासा** पुं. (तत्.) नया बर्तन, वस्त्र जो प्रयोग में न लाया गया हो, कोरा, अनवासा वस्त्र।

**अनवास्थिति** स्त्री. (तत्.) 1. अनवस्थित होने की अवस्था, गुण, भाव 2. अस्थिरता। 3. परिवर्तनशील 4. अल्पावस्था 5. अधीरता, उद्विग्नता 6. संयम, नियंत्रण न होना 7. आधारहीनता।

**अनवीकरणीय** वि. (तत्.) 1. जिसका नवीकरण शक्य (या अभीष्ट) न हो; जिसे पुनः उपयोग में लाने योग्य न बनाना हो 2. जिसे फिर नए सिरे से आरंभ न करना हो।

**अनवीकरणीय संसाधन** पुं. (तत्.) नवीकरण के अयोग्य संसाधन विज्ञो. नवीकरणीय संसाधन।

**अनवीकृत** वि. (तत्.) जिसमें नयापन न लाया गया हो, जिसका नवीकरण न किया गया हो।

**अनवीकृत दोष** पुं. (तत्.) साहि. एक प्रकार का अर्थ दोष। अनेक अर्थों, विषयों, दृश्यों, बातों आदि का एक ही प्रकार से वर्णन होना और कहीं कोई नयापन या विलक्षणता न होने का दोष।

**अनवेक्षण** पुं. (तत्.) 1. अवेक्षण या निरीक्षण का अभाव 2. लापरवाही, असावधानी, उदासीनता।

**अनशन** पुं. (तत्.) 1. अशन अर्थात् भोजन का अभाव, अन्न-त्याग 2. सामाजिक या राजनीतिक दबाव डालने के लिए अन्न-जल का त्याग 3. उपवास, निराहार व्रत।

**अनश्वर** वि. (तत्.) 1. जो ईश्वर न हो, स्थिर, नष्ट न होने वाला 2. अमिट, अटल।

**अनसखरा/अनसखड़ा** वि. (तद्.) भोजन जो सखरा न हो, दूध या घी में पका व्यंजन, पक्की रसोई, चोखा भोजन, मिलावटहीन।

**अनसखरी** वि. (तद्.) अनसखरी रसोई (दाल, भात, रोटी से भिन्न पूड़ी, हलवा आदि) दूध या घी से बनी भोजन सामग्री।

**अनसमझ** वि. (तद्.) नासमझ।

**अनसमझा** वि. (तद्.) 1. जिसने न समझा हो, नासमझ, बिना समझा हुआ 2. अज्ञात।

**अनसिखा** वि. (तद्.) 1. जिसने कुछ सीखा न हो, आशिक्षित, अनपढ़ 2. जिसे सीखा न गया हो।

**अनसूँघा** वि. (तद्.) जिसे अभी सूँघा न गया हो, अनाघ्रात।

**अनसुना** वि. (तद्.) नहीं सुना हुआ, जानबूझ कर न सुना हुआ तु. अनसुनी।

**अनसुनी** वि.स्त्री (तद्.) 1. न सुनी हुई बात 2. अभूतपूर्व मुहा. (सुनी) अनसुनी करना- बात सुनकर भी उपेक्षा करना।

**अनसुलझा** वि. (तद्.) 1. जो न सुलझ पाया हो, जो अभी उलझा हो 2. (कठिन समस्या) जिसका समाधान न हुआ हो 3. प्रश्न आदि जिसे हल न किया जा सका हो 4. कम अक्ल का, अपरिपक्व।

**अनसूय** वि. (तत्.) असूया या द्वेषरहित, पराए में दोष-दर्शन न करने वाला, अछिद्रान्वेषी।

**अनसूया** स्त्री. (तत्.) 1. पराए से द्वेष करने या उसमें दोष न निकालने की प्रवृत्ति, नुक्ताचीनी न करना 2. अत्रि मुनि की पत्नी 3. शकुंतला की एक सखी।

**अनसोची** वि. (तद्.) बिना सोची हुई, अविचारित।

**अनसोया** वि. (तद्.) जिसने निद्रा न ली हो, जो सोया न हो, जागृत।

**अनस्तमन** पुं. (तत्.) सूर्य का अस्त न होना लाक्ष. पतन न होना।

**अनस्तमित** वि. (तत्.) 1. जो अस्त न हुआ हो 2. जिसका पतन न हुआ हो (अनस्तमित भाग्य से वह बच गया)